ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 9, अंक : 1, अक्टूबर 2021

काफी गायन विधाः एक अध्ययन

ओशीन भाटिया नी दिव्या भाटिया

शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Paper recieved on : September 1, Return on September 26, September 29, Accepted on October 11, 2021

सार संक्षेप

भारतीय संगीत में काफी गायन शैली भावपूर्ण व भक्ति से ओतप्रोत काव्य व गायन विधा है। इस गायन शैली को पंजाब व उसके आसपास के क्षेत्रों में गाया जाता है। काफी भक्तिप्रधान रचना है जिसे सूफ़ी संतों व सिक्ख गुरुओं ने लिखा व इसे गायन शैली के रूप में इसका गायन भी किया। सूफी सम्प्रदाय में इसे 'सूफ़ियाना कलाम' भी कहा जाता है। काफी गायकों ने इस विधा में राग व तालों का स्वतंत्रतापूर्वक प्रयोग किया है। यह विधा निबद्ध व अनिबद्ध दोनों रूपों में गाई जाती है। काफी गायकी स्वतंत्र गायन शैली है जिसका अपना ही एक अलग रूप है, कई कलाकारों के अनुसार इसमें कई अन्य गायन शैलियों का प्रभाव देखने को मिलता है। काफी विधा भारत के लिए बहुमूल्य भेंट है जिससे जुड़े तथ्य इस शोधकार्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो कि भविष्य में उपयोगी तथ्य सामग्री के रूप में उपलब्ध हो सकेगी। इस शोधकार्य को करने में मैंने साक्षात्कार, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री प्राप्त की है। इस शोध से काफी से जुड़ी जानकारी व इस विषय में गहनता व इस शोध के दौरान काफी गायन शैली के स्वरूप को सामने लाने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : पंजाबी, काफी, गायन शैली, सूफ़ी, मुल्तानी काफी

शोध-पत्र

पंजाबी साहित्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग है काफी, जिसे पंजाब ही नहीं अपितु बाहर के प्रांतों के कलाकारों ने भी अपनाया व इसे गाया। जिस प्रकार हिन्दुओं में भजन, सिक्खों में शब्द, उसी प्रकार सूफ़ियों के भक्ति सम्प्रदाय में काफी जिसे वह 'सूफ़ियाना कलाम' भी कहते हैं। काफी के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हैं, कई इसे राग का एक प्रकार मानते हैं तथा कुछ कविता का भेद। प्रारम्भ में यह राग रहा होगा, परन्तु मध्यकाल में यह कविता के उस भेद के रूप में उभरा जिसका अभिप्राय एक विशेष प्रकार की प्रभु वाली कविता से है जिसे अंतरों में गाया जाता है। काफी एक सांगीतिक रचना है जो कवि गाने के लिए रचता है। काफी का गायन पीर-फकीरों के दरगाहों पर पूर्वकाल से होता आया है। जिसमें जबात तथा खुमारी का तत्व होता है। यह गायन विधा भक्तिरूप से भरपूर तथा रहस्यवादी काव्य का मेल है। इस विधा को सामूहिक रूप में सूफ़ी फकीर अपने ईश्वर, पीर-ओ-मुर्शद के लिए गाते थे। काफी एक फारसी शब्द है जिसे फारसी के 'काफ़िया' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ तुकांत है और यह साधारणतः पंजाबी सूफ़ी काव्य को दर्शाता है। इसका उल्लेख अंग्रेजी में इस प्रकार मिलता है–"The name is borrowed from Persian 'Kafia' meaning rhyme and is applied to Punjabi Sufi poetry in general. Usually it is a poem on the divine attributes and some times on various sufi beliefs. Kafia are found in Punjabi music." [1]

काफी पंजाब की समृद्ध काव्य-शैली है जिसमें पंजाबी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाएँ जैसे उर्दू, फारसी, अरबी, तुर्की, पाली, प्राकृत, ब्राह्मी आदि भी शामिल हैं। काफी गायन में भगवान से इश्क़ उसे 'यार', महबूब कहकर व्यक्त किया गया है। कुछ विद्वानों के अनुसार काफी विशेषतः ख़ुदा की इबादत में गाया जाने वाला गीत है।

डिक्शनरी ऑफ इस्लाम के अनुसार–''ख़ुदा के नाम की जितनी भी तारीफ़े हैं वे सभी इस काव्यशास्त्र 'काफी' में उपलब्ध होती हैं।'' [2] इस्लाम धर्म के लोग काफी को विशेषतः ख़ुदा व ख़ुदा की इबादत का नाम मानते हैं।

'काफी' शब्द अरबी के 'कफ्फा' से संबंध रखता है जिसका अर्थ है–'काफी होना', 'पूरी करना', 'पूरी पाना' या किफायत करना। 'फरहंग-ए-आमरा' के अनुसार–वह जो सम्पूर्ण हो, जो कि ख़ुदा ही हो सकता है। काफी ख़ुदा की बंदगी है। [3]

उस्ताद हुसैन बख़्श गुल्लू (पाकिस्तान) से साक्षात्कार द्वारा, उनके अनुसार–'काफी सूफ़ी संतों द्वारा लिखी हुई बाणी है जिसे घरानेदार कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत मिश्रित करके इसे गाया।'' [4] 'काफी का विवेचन करते समय कैफ शब्द पर भी विचार कर लेना अनुपयुक्त न होगा। आनन्द, मस्ती, मतवालापन आदि भावों को व्यक्त करता है।'' [5]

काफी के विषय में एक परिभाषा निश्चित करना कठिन है क्योंकि इसके संदर्भ में विभिन्न कलाकारों के अपने मत हैं। काफी के काव्य

का कोई विशेष छंद नहीं है किन्तु जब इसे गाया जाता है तो इसका ताल व संगीतबद्ध होना आवश्यक है। श्री पूरणचन्द वडाली (पंजाब) जी के अनुसार–'काफी गायन शैली है जिसे सूफ़ी कलाम भी कह सकते हैं व यह कठिन गायकी है जिसे मँझा हुआ कलाकार ही गा सकता है।'' [6] काफी पंजाब के दक्षिण पश्चिम की ओर से आई, यहाँ से सूफ़ी मत और फकीर लोग आए।

''काफी पंजाब कविता दो ओह रूप है, जिस विच मुस्लमान सूफी. भगत आपणे आध्यात्मिक अनुभव नूँ ब्यान करदे सन। जिवें नाथां ते गुरुआं दीआं रचनावां नूं भजन कह दित्ता जांदा है, ओंज ही सूफ़ी भगतां दीआं रचनावां नूँ, बहुत सारीआं हालातां विच, काफी केहा जांदा सी।'' [7]

''अरबी और फ़ारसी भाषा में काफी शब्द न मिलकर 'कवाफी' मिलता है जो काफिया का बहुवचन है। काफिया का अर्थ तुक होता है जिसको अंग्रेजी में 'Rhyme' कहते हैं। सतुकान्त पद्यात्मक रचनाओं में तुकों की आवृत्ति की अनिवार्यता होती है।'' [8] काफी के विषय में पंजाबी साहित्य कोश अनुसार–'काव्य क्षेत्र में यह गीत वह स्थायी पद हैं जिसको गाने के लिए तुकों को जोड़ा जाए। गीत गाते समय स्थायी पंक्तियाँ बार-बार आती हैं। वास्तव में काफी कोई ख़ास छन्द नहीं केवल गाने का एक ढंग है। सूफ़ी फकीर मस्ती भरे गीत गाते हैं और गीत की मुख्य पंक्ति उनके आस-पास बैठे मुरीद दोहराते हैं, ऐसा गीत काफी हैं।'' [9]

काफी का रचनाकाल

पंजाब के साहित्य का महत्वपूर्ण अंग, सूफ़ी काव्य का प्रमुख भाग है काफी। काफी की रचना का आरम्भ कब हुआ, इस विषय में प्रमाणों का अभाव है। काफी के रचनाकाल के विषय में विद्वानों के अपने मत हैं। शोधकार्य के दौरान पाए गए तथ्यों के आधार पर पहले मत अनुसार–

1. काफी का आरम्भ गुरु नानक देव जी द्वारा हुआ (1469 ई.)
2. काफी को सर्वप्रथम बाबा फरीद ने लिखा (12-13वीं शताब्दी)

इस विषय में एक और मत है 'सूफ़ी साहित्य के इतिहास के आधार पर शाह हुसैन पहले सूफ़ी ठहरते हैं जिन्होंने काफ़ियों की रचना की।''[10] चूँकि गुरु नानक देव जी की लिखी हुई काफ़ियाँ उपलब्ध है। उस आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकतर मतानुसार गुरु जी द्वारा काफ़ियों की शुरूआत हुई। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में गुरु नानक देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुनदेव जी द्वारा लिखी हुई काफ़ियाँ है जिनके रागों के बारे में भी बताया गया है। गुरु नानक देव जी द्वारा लिखी गई काफी का उदाहरण पेश है–

(मारु काफी महला-1) (घर-2) (अंग-1014-1015) [11]

आवउ वंजउ डुमणी कित्ती मित्र करेउ।
सा धन ढ़ोई न लहै वाढी किउ धीरेंउ॥
मेडा मनु रता आपनड़े पिर नालि
हउ घोलि घुमाई खंनींए कीति हिक भोरी नदरि निहालि॥ (रहाउ)
पेइअड़े डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ
मै गलि अउगण मुठड़ी बिनुं पिर झूरि मराउ॥
पेइअड़ै पिरु समला साहुरड़ै घरि वासु
संविध सोहागणी पिरु पाइआं गुणतासु॥
लेफु निहाली पट की कापडु अंगि बणाइ
मुती डोहागणी तिन डुखी रैणि विहाइ॥
किती चखउ साड़ड़े किती वेस करेउ
पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढ़ी झूरेदी झूरेउ॥
सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि
सचे सचा बैहणा नदरी नदी पिआरी।
गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु
गुरमुखि बूझै जाणिऐ हउमै गरबु निवारि॥
तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ किती आह
नानक नाहु न वीछुड़ै तिन सचै रतड़ी आह॥
गुरु नानक देव जी द्वारा लिखी हुई काफी

राग सूही (महला-1) (घर-1) (अंग-751) [12]

माणस जन्म दुलंभ गुरमुखि पाया॥
मन तन होऐ चुलंभ जे सतगुर भाया॥
चलै जन्म सवार वखर सच लै॥
पत पाये दरबार सत्गुर शब्द पै॥ (रहाउ)
मन तन सच सलाह साचे मन पाया॥
लाल रता मन मानिआ गुरु पूरा पाया॥
हौं जीवाँ गुण सार अंतर तूँ वसै॥
तूँ वसहे मन माहे सहजे रस रसै॥
मुरख मन समझाऐ आखउ केतड़ा॥
गुरमुख हर गुण गाऐ रँग रँगेतड़ा॥
नित नित रिदै समाल प्रीतम आपणा॥
जे चलहै गुण नाल नाहीं दुख संतापड़ा॥
मनमुख भ्रम पुलाणा ना तिस रँग है॥
मरसी होए विढ़ाणा मन धन भँग है॥
गुर की कार कमाई लाहा घर आया॥
गुरबाणी निरबाण सब्द पछाणिऐ॥
इक नानक की अरदास जे तुद पावसी॥
मै दीजै नाम निवास हरगुण गावसी॥

गुरु नानक देव जी के उपरांत अन्य गुरुओं ने भी गुरु जी का अनुसरण करते हुए काफ़ियाँ लिखी। गुरु अर्जुनदेव जी द्वारा लिखी गई काफी प्रस्तुत है–

राग-आसा, (घर-8) (महला-5) (अंग-396) [13]

मैं बंदा बै खरीद सच साहिब मेरा॥
जीउ पिंड सभ तिस दा सभ किछ है तेरा॥
माण निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा॥
बिन साचे अन टेक हैं सो जाणहु काचा॥ (रहाउ)
तेरा हुकमु अपार है कोई अंत न पाए।
जिस गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए॥
चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईए॥
तुठा साहिब जो देवै सोई सुख पाइए॥
जे लख करम कमाई अहि किछु पवै न बंधा॥
नानक कीता नाम घर होर छोड़िआ धंधा॥

काफी कवियों के बारे में चर्चा की जाए तो अनगिनत कवि हुए हैं। कुछ मुख्य कवियों के नाम हैं बाबा शेख फरीद, गुरु नानकदेव, गुरु अमरदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु तेग बहादुर, शाह हुसैन, सुल्तान बाहू, वली राम, बुल्लेशाह, अली हैदर, मौलवी गुलाम रसूल, ख़्वाजा गुलाम फरीद, मीराँ शाह जालन्धरी।

काफी के भेद

पंजाबी काफी के छः भेद है–

1. **मुसल्लस काफी**–इस काफी में एक बंद में तीन पंक्तियाँ होती हैं जिसमें पहली एवम दूसरी पंक्ति का काफ़िया मिलता है। इसके रहाओं में चार पंक्तियाँ होती हैं तथा तीसरी रहाउ वाली पंक्ति हम काफ़िया होती है।
2. **मुरब्बा काफी**–काफी के इस भेद में प्रत्येक बंद में चार पंक्तियाँ होती है व हर पंक्ति की दूसरी तथा चौथी पंक्ति का काफ़िया मिलता है।
3. **मुरक्कब काफी**–इस भेद में पहले छंद में तीन पंक्तियाँ होती हैं व पहली, तीसरी पंक्ति में काफ़िया मिलता है।
4. **मुखम्मस काफी**–इसके एक बंद में पाँच पंक्तियाँ होती हैं। इस बंद की चार पंक्तियों का काफ़िया रहाओ वाली पंक्ति से मिलता है।
5. **मसक्कस काफी**–इसके एक बंद में छः पंक्तियाँ होती हैं। इसकी दूसरी, चौथी, छठी पंक्तियाँ हम काफ़िया होती हैं जिसका काफ़िया रहाओ वाली पंक्ति से मिलता है।
6. **मुसब्बा काफी**–इसकी सात पंक्तियाँ होती हैं। इसकी पहली पंक्ति रहाओ वाली होती है व इस पंक्ति से तीसरी, पाँचवीं और सातवीं पंक्ति का काफ़िया मिलता है।

काफी गायन शैली

काफी गायन शैली मुख्यतः दो रूपों में प्रचलित है जिनका नामकरण प्रदेशों के नाम पर किया गया है। इसके दो प्रकार हैं–

1. **मुल्तानी काफी**–मुल्तानी भाषा पंजाबी की उपभाषा है जिसे पाकिस्तान में बोला जाता है। इस भाषा को सैरायकी भी कहते हैं व भारत में भी इस भाषा का प्रयोग करने वाले कई लोग हैं। पाकिस्तान-पंजाब के मुल्तान तथा आस-पास के क्षेत्रों में प्रयुक्त मुल्तानी उपभाषा में रचित काफ़ियों को 'मुल्तानी काफी' कहा जाता है। मुल्तानी काफी की गायन शैली किन्हीं विशेष नियमों में हो ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। इस गायन शैली का अपना ही अंदाज है जिसे कई कलाकारों ने इसे ठुमरी के अंग से व कई कलाकारों ने इसे गीत अंग से गाया है। उस्ताद सलामत अली द्वारा गाई हुई मुल्तानी काफी–'तत्ती रो रो मैं वाट निहारां' ठुमरी अंग से गायी हुई है जिसमें वह गाते-गाते ख़ुद से यह बात दर्शकों को बता रहे हैं। मुल्तानी काफी को अधिकतर शाम चौरासी व पटियाला घराना के गायकों ने अपनाया, गाया व इसे प्रचलित किया।
2. **सिंधी काफी**–सिंधी काफी के विषय में यह मत है कि बाबा शेख़ फरीद की मजलिस-ए-समा में सिंध से कुछ गवैये आये थे जिन्होंने सिंधी वाइयाँ पेश की यही वाइयाँ आगे चलकर काफी के नाम से प्रसिद्ध हुई। सिंधी काफी सिंधी भाषा में गायी जाती है व इस भाषा की पंजाबी व सैरायकी की भाषा से काफी निकटता है। सिंधी साहित्य में काफी का प्रारम्भ अब्दुल लतीफ (1689-1752) से माना जाता है। अब्दुल लतीफ ने कुल 30 सुरों (रागों) में वाइयाँ लिखी, गायन शैली सिंधी काफी रागबद्ध है। मशहूर गायिका आबिदा परवीन जी व सनम मारवी ने कई सिंधी काफ़ियाँ गाई है जिसकी पी.टीवी. पाकिस्तान द्वारा अप्रकाशित रिकॉर्डिंग प्राप्त हो पाई।

हिन्दुस्तान का पंजाब व पाकिस्तान का पंजाब, यहाँ के कई विख्यात कलाकार हैं जिन्होंने काफी गायन शैली को अपनाया व गाया उनके नाम हैं–उस्ताद लक्ष्मणदाससंधु, वडाली बंधु, रेशमा, नुसरत फतेह अली खान, पूरनशाह कोटि, उस्ताद हुसैन बख़्श गुल्लू, उस्ताद सलामत अली खाँ, श्री हंसराज हंस, आबिदा परवीन, शाहिदा परवीन आदि। काफी के अपने गायन अंदाज़ के अलावा काफी गायन शैली पर अन्य गायन शैलियों का प्रभाव देखने को मिलता है। कुछ विद्वानों का मत इससे भिन्न है जो कुछ कलाकारों द्वारा साक्षात्कार के दौरान प्राप्त हुआ, उनके अनुसार काफी गायकी किसी और शैली से प्रेरित नहीं है अपितु वह भिन्न गायन विधा है। वहीं ऐसी काफ़ियाँ भी हैं जिनमें अन्य मुख्य शैलियों का रंग देखने को मिलता है। काफी गायन शैली पर उपशास्त्रीय संगीत का प्रभाव देखने को मिलता है जिसमें अधिकतर ख़ानदानी गवैयों ने इसे ठुमरी अंग से गाया है जिसमें उस्ताद आशिक

अली खाँ पटियाला घराना के व उस्ताद हुसैन बख़्श ढ़ियाड़ी के नाम उल्लेखनीय है। इनका संबंध पाकिस्तान पंजाब से है।

शाम चौरासी घराने के उस्ताद मुबारक अली खाँ (पाकिस्तान) के अनुसार 'काफी को लोक गीत से प्रभावित मानना अधिक उचित होगा क्योंकि सूफ़ी फकीर जब काफी मस्ती में गाते थे तो वह लोक जनजीवन में सादा तरीके से लोगों को गाकर सुनाते थे,'' [14] उदाहरण के तौर पर काफी 'आओ नी सइयो रल देयो नी वधाई' काफी को लोक गीत के अंदाज़ में गाया गया है। काफी पर कव्वाली गायन शैली का भी प्रभाव देखने को मिलता है क्योंकि कई कव्वाल गायकों ने काफी को इस अंदाज़ में गाया है जैसे नुसरत फतेह अली खाँ। ऐसी कई विख्यात कव्वालियाँ है जो काफी है जैसे–तेरे इश्क़ नचाया कर थईया थईया, सोणे मुखड़े दा लैण दे नाारा, मैंनू यार मनोना फुरसत नहीं। काफी रचनाकारों ने काफी के रागों के विषय में भी बताया है, वह अपनी काफ़ियों को रागबद्ध भी किया है। काफी गायन शैली में गुरु नानक देव जी की काफ़ियाँ राग आसा, सूही और मारु से संकेतित हैं।[15] शाह हुसैन अपनी काफी गायन के लिए विशेष प्रसिद्ध थे व उन्हें शास्त्रीय संगीत का विशेष ज्ञान भी था। उनकी सभी रचनाऐं राग आधारित हैं। 'आपने 35 रागों के अन्तर्गत 165 काफ़ियों की रचना की है। आपके द्वारा प्रयोग में लाए गए रागों का नाम इस प्रकार हैं–सिरी, गौड़ी, माझ, काफी, आसा, आसावरी, झिंझोटी, गूजरी, देवगंधारी, वडहंस, सोरठ, धनासिरी, जयजयवंती, तिलंग, सिंदूरा, सूही, बिलावल, गौड़ बिलावल, रामकली, परज जोग, तुखारी, केदारा, भैरव, भैरवी, वसंत, हिंडोल, सारंग, कानड़ा, तिलंग कानड़ा, मारू, जंगला, कल्याण, काफी और ललित।''[16] पंजाबी काफी का काव्य व गायन शैली भारत की धरोहर है। काफी का साहित्यिक व सांगीतक रूप हमारे लिए बहुमूल्य भेंट है जिसे आने वाली पीढ़ी को इस गायन शैली को सीखने का प्रयत्न करना चाहिए।

काफी गायन शैली अन्य गायन शैलियों से भिन्न विधा है। इस पर अन्य गायन शैलियों का प्रभाव ज़रूर देखने को मिलता है किन्तु इसे गाने के लिए भाषा ज्ञान व राग ज्ञान आवश्यक है। काफी गायन के लिए खुली आवाज़ का प्रयोग, तानों की, गले की तैयारी व ताल ज्ञान आवश्यक है। उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ (कसूर पटियाला घराना) व उनके बेटे उस्ताद मुन्नवर अली खाँ ने इसे जिस अंदाज़ से गाया है, वह गायकी अत्यन्त कठिन है। काफी के गायकी के अंदाज में बोल का ताल के बहर में रख रखाव व हरकतों और मुर्कीयों का प्रयोग बहुत ही प्रभावशाली है। आवाज़ का लगाव व उस अंदाज़ में इसका प्रयोग काफी को अन्य विधाओं से भिन्न करता है। काफी को अधिकतर गायकों ने ताल कहरवा में गाया है जिसमें कहरवा के कई प्रकार सामने आते हैं। उदाहरण के तौर पर–

वडाली बंधु की काफी–आ मिल यार पियारेआ

×				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	तिं	ऽ	गे	ता	तिं	ऽ	क

अधिकतर गायकों ने ठेके के इस प्रकार का प्रयोग किया है।

काफी गायन शैली का आरम्भ गुरु नानक देव जी (1469 ई.) से माना जाता है। काफी काव्य के साथ सांगीतिक रूप की बात की जाए तो इसे सिक्ख गुरुओं ने रागों में रचा व इस गायन शैली को सूफ़ी संतों ने भी रागबद्ध किया। कुछ धुनें ऐसी भी हैं जो पीढ़ियों से प्रचलित है व उसी प्रकार गायी जा रही है जैसे–'जिंदड़ी लुटी दे यार सजण', 'आवो नी सईयो रल देओ नी वधाई।'

काफी की वर्तमान स्थिति के विषय में बात की जाए तो काफी ख़ानदानी गायकों व कुछ सूफ़ी गायकों तक ही सीमित रह गई है। अधिकतर कलाकार हिन्दुस्तान पंजाब व पाकिस्तान पंजाब के हैं जिनमें कुछ कलाकारों के साथ शोधकर्ता को साक्षात्कार करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

अधिकतर कलाकारों के अनुसार युवा पीढ़ी को काफी विधा के विषय में अधिक जानकारी नहीं है, इस गायन विधा को गाने के लिए काफी की भाषा व इस शैली में प्रयुक्त होने वाले रागों को जानना आवश्यक है। हिन्दुस्तान पंजाब में वर्तमान समय में श्री पूरणचंद वडाली, श्री पूरण शाह कोटि, श्री हंस राज हंस, लखविंदर वडाली, सैय्यदा बेगम, शौकत अली मतोई, सरदूल सिकंदर जिनका 24 फरवरी 2021 में निधन हुआ, यही कुछ गिने चुने कलाकार इस विधा को आगे लेकर जा रहे हैं जिसमें अधिकतर गायकों का अंदाज़ काफी को कव्वाली के रूप में गाया गया है। बाबा बुल्लेशाह द्वारा लिखी गई काफी 'बुल्लाह की जाणा मैं कोन' रब्बी शेरगिल द्वारा 2007 में गाई गयी जिसका अंदाज़ वर्तमान काल में चलने वाले संगीत के अनुसार था। शोधार्थी के अनुसार काफी का काव्य व इसकी अमूल्य गायन शैली भारतीय संस्कृति व संगीत के लिए भेंट है। जिस प्रकार ग़ज़ल, कव्वाली शैली को बढ़ावा मिल रहा है उसी प्रकार इस गायन विधा को आम जन-जीवन तक लाना ज़रूरी है। शोधकर्ता को सैरायकी भाषा आती है व इस गायन शैली की कुछ विशेषताएँ व रचनाएँ सीखने का मौका प्राप्त हुआ। उन रचनाओं को एकत्रित कर व कुछ ऐसे कलाकार जो अधिक साधन उस समय न होने के कारण सामने नहीं आ पाए, उनकी गाई हुई काफ़ियों को एकत्रित करना इस शोधकार्य का लक्ष्य है। शोधकर्ता को काफी गायन को प्रस्तुत करने का भी मौका प्राप्त हुआ व यही प्रयास रहा है जो भी जानकारी इस शोधकार्य के दौरान प्राप्त हुई और काफी की रचनाऐं, उन्हें मैं ख़ुद गाती हूँ जिन्हें मुझे शाम चौरासी घराने के पाकिस्तानी कलाकार उस्ताद मुबारक अली खाँ साहब व अकबर अली जी से सीखने का अवसर प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में पंजाबी काफी गायन शैली व काव्य के विषय में जानकारी प्राप्त हुई है। काफी गायन विधा के तत्व व काफी के भेद व प्रकारों के बारे में बताया गया है।

काफी शब्द की उत्पत्ति व विद्वानों द्वारा काफी की परिभाषा व काफी गायकों के साथ किए साक्षात्कारों के आधार पर काफी की गायन शैली व काव्य शैली पर विचार किया गया है।

काफी की उत्पत्ति के विषय में मत हैं जिसे इस शोध कार्य में प्राप्त तथ्यों द्वारा यह बताने की कोशिश की गई है कि काफी का उद्‌गम किस प्रकार हुआ। काफी गायन शैली के रचियता व उनके द्वारा बताये गये रागों का विवरण भी इस शोध कार्य में प्रस्तुत है। काफी गायन पर अन्य गायन शैलियों का भी प्रभाव देखने को मिलता है जैसे ठुमरी, लोक-गीत, कव्वाली।

संदर्भ गंथ सूची

1. Rama Krishna Lajwanti, Punjabi Sufi Poets, Asha Janak Publications, New Delhi, 1973, p. 11.
2. Hughes Thomas Patrick, Dictionary of Islam, Rupa and Co., Allahabad, 1999, p. 74
3. फरहंग-ए-आमरा, मुहम्मद अब्दुल्लाहख़ान ख़वेशगी, मुक्तादीराह-ई-कौमी ज़ुबान, इस्लामाबाद, 2007, पृ. 396
4. उस्ताद हुसैन बख़्श गुल्लू (पाकिस्तानी कलाकार) के साथ साक्षात्कार, 1 मई 2021, शाम 7.30 बजे।
5. एस.एस. कोहली, चौणवीयाँ काफ़ियाँ, भाषा विभाग, पटियाला, 1973, पृ. 537.
6. पूरणचंद वडाली (पंजाब) के साथ साक्षात्कार, 5 नवम्बर 2019, शाम 8 बजे।
7. प्यारा सिंह भोगल, साहित्यिक निबंध, हृदयजीत प्रकाशन, जालंधर, प्रथम संस्करण, 1970, पृ. 130
8. गीता पैन्टल, पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1988, पृ. 91
9. पंजाबी साहित्य कोश, पंजाबी यूनिवसिर्टी, भाग पहला, 1971, पृ. 221-222
10. Opcit, गीता पैन्टल, पंजाब की संगीत परम्परा
11. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, मारु काफी, महला-1, (घर-2), प्रकाशकः भाई जवाहर सिंह, कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी, बाज़ार माई सेवा, अमृतसर, पृ. 221-222
12. Ibid, सूही काफी (महला-1), (घर-1), पृ. 751
13. Ibid, आसा काफी (महला-5), (घर-8), पृ. 396
14. मुबारक अली खाँ (पाकिस्तानी कलाकार) के साथ साक्षात्कार, 12 अगस्त 2018, शाम 8 बजे।
15. पंजाबी साहित्य कोश, पंजाबी यूनिवसिर्टी, भाग पहला, 1971, पृ. 222
16. Opcit, गीता पैन्टल, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ. 94